अम्बेडकर के सन्दर्भ में व्यक्तिगत अवसर, सामाजिक न्याय और सम्मान
Individual Opportunity, Social Justice and Dignity with Reference to Ambedkar

अम्बेडकर द्वारा प्रतिपादित शिक्षा का दर्शन पूर्णत: तीन तथ्यों पर आधारित है प्रथम स्वतन्त्रता, द्वितीय विश्व बन्धुत्व तथा तृतीय समानता। इन तीन तथ्यों के आधार पर ही अम्बेडकर ने अपने शिक्षा के दर्शन की आधारशिला रखी है। अम्बेडकर का मानना था कि ये तीनों तथ्य ही शिक्षा व्यवस्था एवं दार्शनिक व्यवस्था के लिये परमावश्यक माने जा सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति इन तीनों तथ्यों से अलग हटकर समाज के संचालन एवं शिक्षा व्यवस्था के संचालन की बात करता है तो वह दिन में स्वप्न देखता है। उन्होंने अपने दर्शन में यह सिद्ध किया है कि मानवता का कल्याण इन तीनों आधारों पर ही सम्भव है। इसलिये उन्होंने उन विद्वानों को अपने जीवन में स्थान दिया जो इन तीनों आधारों के प्रबल समर्थक थे; जैसे—कबीरदास समानता, स्वतन्त्रता एवं विश्व बन्धुत्व के पक्षधर थे। इसी प्रकार महात्मा बुद्ध एवं ज्योतिबा फुले भी इस प्रकार की विचारधाराओं के समर्थक थे। इस प्रकार अम्बेडकर का शिक्षा दर्शन इन तीनों सिद्धान्तों या विचारों के चारों ओर घूमता दृष्टिगोचर होता है। अम्बेडकर के शिक्षा के दर्शन को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है—

1. समानता आधारित शिक्षा का दर्शन (Equality based philosophy of education)—समानता आधारित शिक्षा दर्शन पर विचार किया जाये तो अम्बेडकर को इसका प्रणेता माना जा सकता है। अम्बेडकर ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समानता को प्रतिपादित करने के लिये कहा था। उनका मानना था कि तब तक सम्पूर्ण विश्व में विकास एवं शान्ति स्थापित नहीं हो

सकती है जब तक समानता की स्थिति समाज में नहीं होगी क्योंकि असमानता वर्ण संघर्ष को जन्म देती है और वर्ण संघर्ष से किसी भी समाज का भला नहीं हो सकता। इसलिये जीवन का प्रत्येक पक्ष एवं मानवीय कल्याण समानता के आधार पर ही सर्वोत्तम रूप में हो सकता है।

2. स्वतन्त्रता आधारित शिक्षा का दर्शन (Liberty based philosophy of education)—स्वतन्त्रता आधारित शिक्षा के दर्शन के प्रणेता भी अम्बेडकर ही थे। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति में उसके स्वयं के विचार एवं योग्यता होती है। यदि व्यक्ति के इन विचारों का एवं योग्यता का लाभ लेना है तो उसको पूर्ण रूप से स्वतन्त्रता प्रदान करनी होगी क्योंकि स्वतन्त्र वातावरण में ही व्यक्ति अपनी योग्यता एवं विचारों का प्रस्तुतीकरण करता है जिसका लाभ समाज एवं सम्पूर्ण विश्व को होता है। कबीरदास के स्वतन्त्र विचार आज भी प्रासंगिक हैं और प्राचीन समय में भी प्रासंगिक थे। इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को उसके कार्य, व्यवहार एवं विचारों में स्वतन्त्रता प्रदान करनी चाहिये तथा समीक्षात्मक दृष्टि से उसके कार्य एवं व्यवहार को स्वीकार किया जाना चाहिये। दूसरे शब्दों में अम्बेडकर की यह स्वतन्त्रता सदाचार एवं उपयोगितावाद पर आधारित थी।

3. विश्व बन्धुत्व पर आधारित शिक्षा का दर्शन (Fraternity based philosophy of education)—अम्बेडकर का शिक्षा दर्शन पूर्णत: विश्व बन्धुत्व की भावना पर आधारित था। उनका मानना था कि जब तक सम्पूर्ण पृथ्वी पर एक जैसी विचारधारा के व्यक्ति नहीं होंगे तब तक समाज का भला नहीं हो सकता। सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाय की भावना अम्बेडकर दर्शन में भी विद्यमान थी। इसलिये वह सदैव विश्व बन्धुत्व की बात को स्वीकार करते थे। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति जो कि इस पृथ्वी पर उत्पन्न हुआ है वह हमारा भाई है तथा उसका सहयोग करना हमारा दायित्व है। हमको मात्र अपने हित के बारे में न सोचकर सभी के हित के बारे में व्यापक रूप से विचार करना चाहिये।

4. व्यापक दृष्टिकोण आधारित शिक्षा का दर्शन (Broad view based philosophy of education)—अम्बेडकर द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के दर्शन में व्यापकता का दृष्टिकोण समाहित है। इसलिये उन्होंने अपने विचारों में व्यापकता का समावेश किया है। उन्होंने संकीर्ण सोच एवं संकीर्णता से सम्बन्धित गतिविधियों की आलोचना की है। उनका मानना था कि व्यापकता के आधार पर ही मानव कल्याण सम्भव है। व्यापक दृष्टिकोण ही सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। इसलिये उनका शिक्षा दर्शन प्रत्येक मानव के लिये था।

5. कर्म आधारित शिक्षा का दर्शन (Karma based philosophy of education)—अम्बेडकर का मानना था कि माता-पिता मात्र जन्म के अधिकारी होते हैं, भाग्य के अधिकारी नहीं होते हैं। व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माण स्वयं होता है। उसकी पहचान उसके कर्म से होती है। कर्म का परिष्कृत रूप शिक्षा से बनता है। इसलिये अम्बेडकर शिक्षा को सभी के लिये उपयोगी मानते थे। उनका मानना था कि शिक्षा मानव को सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र दोनों के सन्दर्भ में ही विकसित करती है। शिक्षित व्यक्ति से ही समाज का कल्याण सम्भव हो सकता है क्योंकि वह अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक होता है।

6. सामाजिक न्याय आधारित शिक्षा का दर्शन (Social justice based philosophy of education)—सामाजिक न्याय आधारित दर्शन के अन्तर्गत अम्बेडकर का मानना था कि शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति जागरूक बनता है तथा अपने अधिकारों के लिये संघर्ष करता है।

इस स्थिति में वह अपने प्रति होने वाले अन्याय को रोकता है। अम्बेडकर का मानना था कि सामाजिक अन्याय को रोकने के लिये शिक्षा प्रमुख साधन के रूप में कार्य करती है। अशिक्षित व्यक्ति को सामान्य रूप से मूर्ख बनाया जा सकता है परन्तु शिक्षित व्यक्ति अन्याय का विरोध करता है। अत: यह शिक्षा दर्शन न्याय आधारित माना जाता है।

7. चरित्र आधारित शिक्षा का दर्शन (Character based philosophy of education)—चरित्र आधारित शिक्षा का दर्शन महत्त्वपूर्ण माना जाता है। अम्बेडकर का दर्शन चरित्र को महत्त्वपूर्ण स्थान देता है। उनका मानना था कि जो शिक्षा चरित्र निर्माण नहीं कर सकती है वह शिक्षा सारहीन है। इसलिये शिक्षा में उस पाठ्यक्रम को समाहित करने पर वह बल देते थे जो मनुष्य में चारित्रिक गुणों का विकास कर सके। चारित्रिक गुणों के अन्तर्गत अम्बेडकर प्रेम, सहयोग एवं भाई-चारे के गुणों को महत्त्वपूर्ण मानते थे। उनका मानना था कि चरित्र निर्माण से ही पृथ्वी पर स्वर्ग बनाया जा सकता है।

8. मानव कल्याण पर आधारित शिक्षा का दर्शन (Human being wefare based philosophy of education)—मानव कल्याण आधारित शिक्षा के दर्शनों की श्रृंखला में अम्बेडकर के शिक्षा दर्शन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अम्बेडकर कहते थे कि मानव को मरने के बाद स्वर्ग की प्राप्ति होती है परन्तु उनकी शैक्षिक एवं दार्शनिक विचारधारा को आत्मसात् कर लिया जाये तो वह पृथ्वी पर स्वर्ग बनाने की स्थिति उत्पन्न कर सकते हैं अर्थात् जीवित अवस्था में ही प्रत्येक व्यक्ति स्वर्ग का आनन्द प्राप्त कर सकता है। अत: उनका दर्शन मानव कल्याण पर आधारित था।

9. मानव धर्म आधारित शिक्षा का दर्शन (Human being religion based philosophy of education)—अम्बेडकर का शिक्षा दर्शन पूर्णत: मानव धर्म पर आधारित था। वह उस धर्म को स्वीकार करते थे जो कि सभी व्यक्तियों को समानता की दृष्टि से देखता है तथा जिसमें जातीयता एवं नस्ल आधारित कोई भेदभाव नहीं होता है। इस धर्म के रूप में वह बौद्ध धर्म से प्रभावित थे। बौद्ध धर्म को ही वह तर्कसंगत एवं उपयोगी समझते थे। उसके अनुरूप आचरण को अच्छा समझते थे। इसलिये उन्होंने बौद्ध धर्म की प्रशंसा अनेक स्थानों पर की है। उनका मानना था कि बौद्ध धर्म मानवता एवं नैतिकता के अधिक समीप है।

10. जीवन संघर्ष आधारित शिक्षा का दर्शन (Life struggle based philosophy of education)—जीवन संघर्ष आधारित शिक्षा दर्शन पर विचार किया जाये तो अम्बेडकर ने समाज में विकास के लिये संघर्ष एवं संगठन के तथ्यों को स्वीकार किया है। उनका मानना था कि विकास संघर्ष का परिणाम है। सामान्य शिक्षा से किसी भी व्यक्ति का सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता है वरन् शिक्षा का वह स्वरूप मानव का कल्याण कर सकता है जिसमें चैतन्यता, संघर्ष एवं संगठन जैसी व्यवस्था को उत्पन्न करने की क्षमता हो।

11. मानवता आधारित शिक्षा का दर्शन (Humanity based philosophy of education)—अम्बेडकर का शिक्षा दर्शन पूर्णत: मानवतावादी रहा है। उन्होंने मानव को अपने हितों की रक्षा के लिये एक ओर जागरूक किया तो दूसरी ओर कर्त्तव्य पालन के लिये सतर्क किया है। उनका मानना था कि व्यक्ति जब अधिकार के लिये संघर्ष कर सकता है तो उसको कर्त्तव्य पालन में सहिष्णुता का परिचय भी देना चाहिये। उन्होंने अपने दार्शनिक विचारों में सदैव शिक्षा का उपयोग जागरूकता, मानव कल्याण, मानवाधिकार एवं मानव स्वतन्त्रता के लिये किया। उन्होंने दास प्रथा को भी अनुचित बताया।

12. वैज्ञानिक दृष्टिकोण आधारित शिक्षा का दर्शन (Scientific view based philosophy of education) — अम्बेडकर का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य मानवीय रूढ़िवादी व्यवस्थाओं एवं अन्धविश्वासों को वैज्ञानिक प्रयोग की कसौटी पर परखना सिखाता है। उनका मानना था कि कोई भी व्यक्ति वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव में विकास नहीं कर सकता है। इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक अन्धविश्वासों एवं विभेदों पर विश्वास नहीं करना चाहिये वरन् प्रत्येक तथ्य एवं घटना की सार्थकता, उपयोगिता एवं वैज्ञानिकता का परीक्षण करना चाहिये।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षा का दर्शन अम्बेडकर के उन विचारों को प्रतिपादित करता है जो कि वह समाज में विकसित करना चाहते थे। वे शिक्षा एव दर्शन दोनों की ही उपयोगिता सामाजिक न्याय, समानता, स्वतन्त्रता एवं सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाय के रूप में करना चाहते थे।